❋ 11 मई 2014 (30-6-77) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] ब्राह्मण आत्माओं के सम्पर्क में स्नेह और सहयोग की भावना रखनी है, न कि अथॉरिटी यूज करनी है और कर्मेन्द्रियों के ऊपर सूक्ष्म शक्तियों के ऊपर अथॉरिटी चलानी है। उसमें कभी भी अधीन होना कि मेरे स्वभाव, संस्कार ऐसे हैं– आलमाईटी अथॉरिटी के यह बोल नहीं हैं। जो स्वयं के ऊपर अथॉरिटी नहीं चलाते तो अथॉरिटी को मिस यूज़ करते हैं। तो अथॉरिटी को मिस यूज मत करो।

2] यह तो बापदादा निमित्त बना है एक कर्म का पद्मगुणा फल देने के लिए। बच्चों को सेवा अर्थ निमित्त बनाते हैं। करेंगे तो पद्मगुणा पायेंगे। तो बच्चों के भाग्य बनाने के लिए निमित्त बनाया हुआ है।

3] सदैव अपकारी के भी शुभ चिन्तक हैं इसलिए सदा सहयोग लेते चलते चलो। अमृतवेले का महत्व जान बाप द्वारा वरदान लेते रहो। सीज़न की समाप्ति अर्थात् सहयोग की समाप्ति नहीं है। हरेक बच्चे के साथ सर्व स्वरूपों से सर्व सम्बन्धों से, बापदादा का सदा हाथ और साथ है। अभी ड्रामानुसार समय मिला है यह अपना लक समझ समय का लाभ उठाओ। विनाश की घड़ी के कांटे आप हो। आपका सम्पन्न होना समय का सम्पन्न होना है। इसलिए सदा स्व-चिन्तन, स्वदर्शन चक्रधारी बनो।

❋ योग-

1] सदा स्वचिन्तन से अपने स्टॉक को जमा करने में लगो। इसी समय को आगे चल करके बहुत याद करना पड़ेगा। तो पीछे यह नहीं सोचना पड़े, पश्चाताप करना पड़े, उसके लिए अभी से स्वचिन्त में लगो।

❋ धारणा-

1] जो बापदादा द्वारा ज्ञान का, गुणों का, शक्तियों का श्रृंगार मिला है, उस श्रृंगार को धारण करो। जैसे आपके जड़ चित्र सदा सजे सजाए हैं, ऐसे चैतन्य रूप में भी सदा सजे सजाए बापदादा के दिल तख्त नशीन, अतिन्द्रिय सुख में झूमते हुए सदा फरिश्ते रूप के नशे में रहना है। यही बापदादा को रिटर्न करना है।

2] प्रैक्टिकल में सदा 'लक्ष्य के प्रमाण लक्षण' स्वयं को वा सर्व को दिखाई दे– उसका बैलेन्स में अन्तर देखा। बैलेन्स करने की कला अभी चढ़ती कला में चाहिए। संकल्प है, लेकिन संकल्प की सम्पूर्ण स्टेज दृढ़ संकल्प है। लेकिन दृढ़ता चाहिए। स्व-दर्शन जिससे माया को सदा के लिए विदाई मिल जाती है, उसके साथ-साथ स्व-दर्शन और परदर्शन दोनों चक्कर घूमते रहते हैं। परदर्शन माया का आह्वान करता है। स्व-दर्शन माया को चैलेन्ज करता है। परदर्शन की लीला की लहर भी अच्छी तरह से दिखाई देती है।

3] सर्व से तोड़ना और एक से जोड़ना आपके लिए सहज है क्योंकि एक द्वारा सर्व प्राप्ति होने से अप्राप्त कोई वस्तू नहीं रहती जिस तरफ बुद्धि भटके। पहले प्यार मिलता है फिर न्यारे होते– इसलिए भी सहज है। तो सबसे न्यारा और बाप का प्यारा, इसी को ही कमल पुष्प समान कहा जाता है। तो चेक करो कमल पुष्प समान हैं? कीचड़ के छींटे तो नहीं पड़ते?

❋ सेवा-

1] मैं डिस्टर्ब हूँ, मैं कुछ करके दिखाऊंगी। क्या करके दिखाऊंगी? हंगामा, या अपने आपको कुछ करते दिखाऊंगी। डिस-सर्विस होगी यह देख लेना, मैं हूँ ही कमज़ोर, संस्कार वश हूँ। मैं बदल नहीं सकती। आपको यह सैलवेशन देनी ही होगी। ऐसे-ऐसे बोल बहुत इजी रूप में, बहादुरी दिखाने के रूप में, दबाने और धमकाने के रूप में, बहुत बोलते हैं। बापदादा को रहम आता है। ऐसी कमजोर आत्माएँ जो संकल्प के बाद वाणी तक भी लाती हैं, कर्म तक भी लाती हैं। इसमें अकल्याण किसका? समझते ऐसे हैं जैसेकि बाप का वा सर्विस का अकल्याण होना है। समझते हैं बाप को नुकसान पड़ेगा। लेकिन इस बातों के संस्कार बनाने वाले अपना ही अकल्याण करने के निमित्त बन जाते हैं। ड्रामानुसार विश्व से का कार्य निश्चित ही सफल हुआ पड़ा है। कोई हिला नहीं सकता।

2] महादानी बनना अर्थात् दूसरों की सेवा करना, दूसरों की सेवा करने से स्वयं की सेवा स्वत: हो जाती है। महादानी बनना अर्थात् स्वयं को मालामाल करना, दूसरों को देना ही लेना है। जितनी आत्मा आत्माओं को सुख, शान्ति, शक्ति वा ज्ञान देते हो, उतनी आत्माओं के प्राप्ति की आवाज़ या शुक्रिया जो निकलता, वह आपके के लिए आशीर्वाद मिलने से अपार खुशी रहेगी इसलिए **चारों ही सब्जेक्ट में महादानी बनने के लिए अमृतवेले अपना प्रोग्राम बनाओ।** एक भी सब्जेक्ट में कम न होना चाहिए।

3] अब ड्रामा की भावी सुना रही है कि आवाज़ से परे जाना है। यह शरीर की खिटखिट भी निमित्त सुना रही है कि शिक्षा बहुत हो गई है। अभी सुनने के बाद समाना अर्थात् स्वरूप बनना– उसकी सीजन है। सुनने की सीजन कितने वर्ष चली! चाहे साकार द्वारा, चाहे रिवाईज कोई द्वारा, सुनने का सीजन बहुत चला है। तो अभी स्वरूप द्वारा सर्विस करना।

4] इसी एक जन्म में जन्मों का जमा करते हो। इतना जमा किया है जो 21 जन्म वह प्रारब्ध भोगते रहो? इतना जमा किया है, जो भिखारी आत्माओं को महादानी बन दान कर सको? सदा स्टॉक को चेक करो। स्टॉक में सर्वशक्तियाँ चाहिए।